हिंदी के महाकवि जयशंकर प्रसाद और मलयालम के महाकवि कुमारनाशान के काव्य में आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति - एक तुलनात्मक अध्ययन |

डॉ. जॉर्ज जोसफ

प्राचार्य ,हिन्दी विभाग,क्राइस्ट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी),बेंगलुरु-२९,कर्नाटक,भारत

सारांश: आत्माभिव्यक्ति स्वच्छन्दतावाद की बुनियादी चेतना है | यहाँ कवि अपनी भावना , दृष्टि और अभिरुचि को अधिक महत्व देकर अपनी अनुभूति को अत्यंत उदात्त बनाकर उसको सार्वजनीन रूप देता है | स्वच्छन्दतावाद की आत्माभिव्यक्ति में अनुभूति के महत्व के बारे में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने कहा है - " प्राचीन ग्रीक समीक्षक प्रकृति की अनुकृति को कला की सज्ञा देते थे | लेकिन स्वच्छन्दवादी अनुभूति की अभिव्यक्ति को कला मानते हैं | मन की प्रक्रिया ही कला में चित्रित घटना को आकार देती है और मानसिक क्रिया ही रूपों की सृष्टि करती है | इस प्रकार स्वच्छन्दतावाद का सारा क्षेत्र मनोमय हो गया |" जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान ने अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करने में जो प्रयास किया वह उनके पूर्व कवियों में नहीं मिलता क्योंकि मध्ययुगीन और रीतिकाल के कवि भी सामाजिक मर्यादाओं से बंधित थे | इसलिए वे अपने काव्यों में अपने प्रणय संबंधों की चर्चा नहीं कर पाते थे |

जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान के काव्य में आत्माभिव्यक्ति अनेक रूपों में दिखाई पड़ती है | जैसे आत्मप्रशंसा , आत्मावलोकन , परिसर के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया , कभी जड़ता और असंतोष , कभी प्रकृति से समरसता , कभी मानव जीवन की रहस्यमयता में जिज्ञासा आदि कितने ही विचारों और अनुभूतियों से कवि की आत्माभिव्यक्ति अभिव्यक्त होती है |

मूल शब्द : आत्माभिव्यक्ति , स्वच्छन्दतावाद , अनुभूति , आत्मावलोकन , आदर्शबोध , आध्यात्मिकता

प्रस्तावना

सच्चे कलाकारों की काव्य सृजना पर परंपरा का जितना प्रभाव रहता है , उतना ही प्रभाव उनके व्यक्तिगत जीवनानुभूति का भी | अंग्रेज़ी कवि वर्डस्वर्थ ने काव्य को तीव्रतम अनुभूतियों की अभिव्यक्ति माना है | प्रसाद और आशान की साहित्य सेवा की प्रेरणा भी उनके व्यक्तिगत जीवनानुभूति है | लेकिन अनुभव विस्तार के साथ व्यक्तिगत अनुभूति पर किसी दर्शन , राजनीति , बौद्धिकता या आध्यात्मिकता जैसे सिद्धांतों का आवरण लगाया जाता है | प्रसाद और आशान दोनों अपने व्यक्तिगत जीवनानुभूति से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े | आत्मानुशासन या भावनाओं के उदात्तीकरण के द्वारा दोनों कवियों ने अपनी अनुभूति को सार्वत्रिक बना दिया |

प्रसाद और आशान का जीवन संघर्ष और द्वंद्वपूर्ण रहा | यही अन्तर्द्वन्द्व उनके काव्यों में , शैली में और चरित्र सृष्टि में पूरी तरह उभरकर आयी है जैसे प्रसाद की सर्वोत्कृष्ट रचना ' कामायनी ' का नायक मनु का

अन्तर्द्वन्द्व | यहाँ मनु के अन्तर्द्वन्द्व का आधार अत्यंत मानवीय है | मनु का व्यक्तित्व विकास मानवीय दुर्बलताओं से अस्पृश्य नहीं | मनु का अन्तर्द्वन्द्व मानवता के इतिहास और विकास अन्वेषण का पोषक है | मनु जीवन पथ का अन्वेषक है |

जयशंकर प्रसाद के काव्यों में आत्माभिव्यक्ति

प्रसाद के 'आँसू ' में कवि की वैयक्तिक जीवनानुभूति का अंकन हुआ है | स्मृति काव्य होने के कारण इसमें कवि की आत्माभिव्यक्ति मुखरित हुई है और अनुभूतिपरक प्रगीत होने के कारण इसमें मानवीकरण , प्रतीक - विधान तथा प्रतीकात्मकता का सुन्दर चित्रण मिलता है | इस काव्य में अतीत के सम्मोहन के भाव के साथ -साथ भविष्य की कल्पना भी की गयी है | कवि अनुभूति की उस ऊंचाई पर पहुँच जाता है जहाँ संसार के सारे दुखों को अंगीकार कर भी सुख - बोध स्पष्ट हुआ है |

प्रसाद जी की ' लहर ' नामक रचना उनकी आत्माभिव्यक्ति का सुन्दर उदहारण है | उसमें उन्होंने लोगों के मन में उठनेवाली स्वाभाविक स्वच्छन्द भावनाओं की लहरों का वर्णन किया है | वास्तव में ' लहर ' में प्रसाद जी का व्यक्तित्व ही बोलता है |इस काव्य में कवि अपनी व्यक्तिगत आन्तरिक अनुभूति से सांसारिक सुख एवं मंगल चाहता है -

" तुम हो कौन और मैं क्या हूँ ?

इसमें क्या है धरा , सुनो |

मानस जलधि रहे चिर - चुम्बित

मेरे क्षितिज उदार बनो | "

प्रसाद के गीतों में मूलतः स्वानुभूति की अभिव्यक्ति अधिक मात्रा में दिखाई पड़ती है और कवि का व्यक्तित्व भी प्रज्वलित होता है -

" चंचल चन्द्र सूर्य है चंचल

चपल सभी ग्रह तारा है

चंचल अनिल , अनल , जल , थल सब

चंचल जैसे पारा है | "

प्रसाद की व्यक्तिवादी चेतना ' कामायनी ' में मनु के शब्दों में उभरकर आती है | जैसे -

" दे दो रानी अपना दुलार

केवल मेरी ही चिंता का

तब चित्त वहन कर रहे भार | "

इस काव्य के आमुख में कवि ने स्पष्ट उल्लेख भी किया है कि मनु , श्रद्धा और इड़ा अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं | मिलन की अनुभूति भी ' कामायनी ' में अत्यंत सुचारु रूप से चित्रित किया है | इस काव्य में इतने अधिक भावाभिव्यक्ति की व्यंजना हुई है कि उनसे मानव जीवन का एक उदात्ततम पूर्ण चित्र का निर्माण होता है |

' कामायनी ' में शैली की वक्रता उक्ति चमत्कार केलिए नहीं बल्कि अनुभूति को तीव्र एवं भाव व्यंजना में गति लेन केलिए है | इस काव्य में सात्विक वृत्तियों की अभिव्यक्ति खूब की गयी है | श्रद्धा सहज भावना की मूर्ति बनकर मनु के जीवन में प्रवेश करती है | दया , माया , ममता , मधुरिमा , अगाध विश्वास आदि पवित्र भावनाओं से भरा अपना ह्रदय वह मनु को समर्पित करती है | प्रसाद ने यहाँ श्रद्धा को ह्रदय की सम्पूर्ण सात्विक वृत्तियों का प्रतीक बनाया है | वैसे कवि ने ' काम सर्ग ' में जीवन में एक नवीन आनंद की अनुभूति की आशा पैदा करने का प्रयास किया है |

कुमारनाशान के काव्यों में आत्माभिव्यक्ति

कुमारनाशान की रचनाओं में भी स्वच्छन्दतावाद की मूलभूत प्रवृत्ति ' आत्माभिव्यक्ति ' अत्यधिक निखार के साथ प्रस्फुटित दिखाई देती है | दर असल मलयालम साहित्य के इतिहास में आत्माभिव्यक्ति की प्रवृति कुमारनाशान के पूर्व ए. आर . राजराजवर्मा , वी. सी. बालकृष्णपणिक्कर आदि कवियों की रचनाओं में दिखाई पड़ती थीं | मगर आशान के काव्यों में जितनी सशक्त और सरस रूप में दिखाई पड़ती है उतनी उनके काव्यों में नहीं पायी जाती |

कुमारनाशान की रचनाओं की खूबी और सफलता इसी में है कि उन्होंने परम्परा की मज़बूत नींव पर नवीनता का प्रासाद बनाया | उनके सारे खंडकाव्यों में आत्माभिव्यक्ति की प्रवृति लहराती दिखाई देती है | एक कवि की अभिव्यक्ति में भावना को प्रमुख स्थान होता है | वह कवित्त शक्ति की नींव है | आशान के काव्यों में इस भावनात्मकता को अत्यथिक मुख्यता मिली है | यह भावना वस्तुतः प्रतिभा है , नवोन्मेष प्रदान करनेवाली प्रज्ञा है , जिसके द्वारा नयी - नयी बातें साहित्य में बनाई जा सकती हैं | उन्होंने अपने काव्यों में रूढ़िगत नियमों के अनुसार वर्णन करने के बदले अपनी व्यक्तिगत रूचि के अनुसार प्रत्येक वस्तु पर आत्मोदगार सुनाना शुरू किया | यहाँ आशान बाह्य संसार से बढ़कर अपने व्यक्तित्व को ही अधिक महत्त्व देने लगे | यानी ' पर ' की अपेक्षा ' स्व ' की महानता बढ़ने लगी | आशान का यह व्यक्तित्ववाद ही उनके काव्य में आत्माभिव्यक्ति का रूप धारण किया |

आत्माभिव्यक्ति के अनेक रूप आशान के काव्यों में मिलते हैं | किसी अन्य घटना या अनुभूति की कवि जिस दृष्टि से देख़ते हैं उस दृष्टि का प्रभाव उसकी कृति पर पड़ता है | कवि वास्तव में यही बदलते हैं कि प्रत्येक घटना की प्रतिक्रिया मेरे मन पर वैसी पड़ी और प्रत्येक बात के सम्बन्ध में मैं क्या सोचता हूँ | जैसे

कुमारनाशान ' वीणपूव ' में एक कोमल पुष्प के प्रारंभिक जीवन से लेकर अंत तक की कथा अपनी दृष्टि से सुनाते हैं | आशान इस काव्य में देखते हैं कि वह फूल का पौधा प्रारम्भ में पालने का बच्चा रहता है , बाद में खिलता है और बड़ा हो जाता है | अंत में अचानक बूढ़ापे में एक दिन वह फूल मुरझाकर डंठल से झड़ जाता है | यहाँ कवि की दार्शनिक मनोवृत्ति भी स्पष्ट दिखाई देती है | एक बात तो सच है कि कुमारनाशान के काव्य में आत्माभिव्यक्ति अधिक मुखर और सच्ची है | जैसे ' वीणपूव ' में आशान की सक्रिय भावना से एक मुरझाया फूल प्रफुल्लित और सुगन्धित फूल से अधिक चेतनायुक्त आकर्षक बन गया |

कुमारनाशान के ' प्ररोदनं ' आत्माभिव्यंजक शोकगीत की कोटि में आता है | अपने गुरु समान ए, आर , राजराजवर्मा के निधन पर आशान के मन में जो भारी दुःख हुआ उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति ही है प्रस्तुत काव्य |

आशान का भाव प्रधान काव्य है ' नलिनी ' जो उनकी मानसिकता का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है | उस काव्य के प्रेमी - प्रेमिका नलिनी और दिवाकरन का पुनः मिलन यथार्थ जीवन में संभव नहीं है | फिर भी कलात्मक अभिव्यक्ति के कारण काव्य में वास्तविकता की अनुभूति पैदा करने में कवि सफल हुए हैं | उदा :

" मानसं परिपवित्रमायित्रि

ध्यानयोग्य चरितं स्मारिचये

ज्ञानी ने भवति सिद्धियारनोरें

मेनियुम महित तीर्थभूमियाय "

(भाव :अरे भवति ! तेरे जप करने योग्य जीवन चरित्र का स्मरण करते समय ही मेरा मानस पवित्र हो गया और मेरी छाती पर गिर कर तेरी मृत्यु होने से मेरा शरीर भी महान लोगों की तीर्थ भूमि बन गयी है |)

आशान की ' लीला ' और ' चण्डालभिक्षुकी ' भी आत्माभिव्यक्ति प्रधान काव्य हैं | जिनमें कवि कलात्मक यथार्थ की अनुभूति पैदा करके काव्य को सहजता प्रदान करते हैं |

उदा : " विदितसमस्नेहराज्यलक्ष्मी -

सदनमतार्ककुम तरवाडलौ | "

(भाव :राज्य का ऐश्वर्य समान-स्नेह-भाव से विराजमान यह सदन सभी का घर है यानी तरवाड है (पूर्वजों का घर) |

आशान की सर्गभावना 'चिंताविष्ठयाय ' सीता में अधिक निखार के साथ प्रकट होती है | सीता के अन्तःकरण के चेतन - अवचेतन के विभिन्न तलों पर अवस्थित होकर उसके मन में उदित भावों , मनोविकारों और विचारों को काव्यात्मक रूप देने की अपूर्व क्षमता आशान की भावना शक्ति ने दिखाई है |

निष्कर्ष : उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्षतः कह सकते हैं कि कुमारनाशान एवं जयशंकर प्रसाद के काव्यों में आत्माभिव्यक्ति की भावना प्रखर रूप में दृष्टिगोचर है | जयशंकर प्रसाद के जैसे कुमारनाशान के काव्यों में भी स्वच्छन्दवादी काव्य संस्कार की तीव्रता , भावनात्मकता , आत्मपरता , आदर्शबोध आदि का प्रबल संयोग हुआ है |

दोनों कवियों के काव्यों में वैयक्तिकता का प्राधान्य रहता है | अतिशय संवेदनशील होने के कारण दोनों कवियों ने अपने व्यक्तित्व का प्रकाशन आकर्षक शैली में किया है | इन्होंने अपनी हृदयस्थ भावनाओं तथा अनुभूतियों को अपने व्यक्तित्व के स्पर्श से आलोकित कर दिया है | इनके व्यक्तित्व के स्पर्श से जीवन और जगत के सभी पदार्थ आकर्षक बन गए हैं | व्यक्तित्व का यह प्रकाशन दोनों कवियों की आत्माभिव्यक्ति का लक्ष्य रहा |

जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान दोनों अपने काव्यों में चाहे वह सांसारिक प्रेम के या आध्यात्मिक प्रेम के , चाहे राष्ट्रीय चेतना के या मानवतावादी चेतना के , सब कहीं कवि स्वयं एक योद्धा बनकर सामाजिक बंधनों से मुक्ति पाने केलिए अकेले लड़ाई करने जैसे दिखाई पड़ती है |

सन्दर्भ :

1.कवि प्रसाद की काव्य साधना - रामनाथ सुमन

2.प्रसाद की काव्य प्रवृत्ति - डॉ.कामेश्वर प्रसाद सिंह

3.प्रसाद का काव्य विवेचन - डॉ.हरदेव बाहरी

4.प्रसाद के काव्य का शास्त्रीय अध्ययन - सुरेन्द्रनाथ सिंह

5.जयशंकर प्रसाद की काव्य कृतियाँ - जयशंकर प्रसाद

6.महाकवि कुमारनाशान - प्रतिनिधि काव्य कृतियाँ - डॉ.विजयन

7.आधुनिक हिंदी काव्य तथा मलयालम काव्य - एन.ई.विश्वनाथ ऐय्यर

8.कुमारनाशान की काव्य कृतियाँ - कुमारनाशान